सम्पर्क सहयोग संस्कार सेवा समर्पण

भारत विकास परिषद्

राजस्थान पश्चिम प्रान्त

संक्षिप्त परिचय

नेत्र जाँच शिविर - बाड़मेर मुख्य

रक्तदान शिविर - जोधपुर मुख्य

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ - सांचोर

वृक्षारोपण - जालोर

मातृभूमि की सेवा में समर्पित प्रबुद्ध नागरिकों का एक विशिष्ट संगठन

स्वस्थ - समर्थ - संस्कारित भारत

भारत विकास परिषद् - संक्षिप्त परिचय

भारत विकास परिषद् एक समाज सेवी, गैर राजनैतिक स्वंयसेवी संगठन है। समाज के प्रबुद्ध, साधन सम्पन्न एवं प्रभावशाली लोगों के सहयोग से तथा संस्कार व सेवा प्रकल्पों के माध्यम से भारतीय संस्कृति पर आधारित समाज का निर्माण कर भारत के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से परिषद् की स्थापना 10 जुलाई 1963 को डॉ. सूरज प्रकाश जी तथा लाला हंसराज जी द्वारा दिल्ली में की गई थी। स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी जी इसके आजीवन संरक्षक रहे हैं। न्यायविद् डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी, न्यायमूर्ति हंसराज खन्ना, न्यायमूर्ति एम. रामा जॉयस, न्यायमूर्ति जीतेन्द्रवीर गुप्ता, न्यायमूर्ति डी. आर. धनुका, न्यायमूर्ति पर्वथा राव तथा न्यायमूर्ति वी. एस. कोकजे परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद को सुशोभित कर चुके हैं। वर्तमान में ये परिषद् के राष्ट्रीय संरक्षक हैं। पूर्व राज्यपाल श्री जगमोहन तथा सी.बी.आई. के पूर्व निदेशक सरदार जोगेन्द्र सिंह ने भी भारत विकास परिषद् को अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया है ।

संगठन

वर्तमान में भारत विकास परिषद् की देश भर में लगभग 1600 शाखाएं तथा 85,000 परिवार सदस्य हैं। संगठन की दृष्टि से देश को 10 रीजन तथा 79 प्रान्तों में विभाजित किया गया है। राजस्थान प्रदेश उत्तर पश्चिम रीजन कहलाता है, जिसमें 7 प्रान्त हैं - 1. राजस्थान - उत्तर, 2. राजस्थान - मध्य, 3. राजस्थान - पश्चिम, 4. राजस्थान - उत्तर पूर्व, 5. राजस्थान - पूर्व, 6. राजस्थान - दक्षिण तथा 7. राजस्थान - दक्षिण पूर्व। उत्तर पश्चिम रीजन में कुल 251 शाखाएं हैं। राजस्थान पश्चिम प्रान्त में 10 जिले - बाडमेर, बालोतरा, जैसलमेर, जालोर, सांचोर, जोधपुर, ग्रामीण, फलोदी, पाली, व सिरोही हैं। राजस्थान पश्चिम प्रान्त में वर्तमान में 33 शाखायें एवं लगभग 2300 सदस्य हैं।

परिषद् की कार्य पद्धति पांच सूत्रों :- सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा व समर्पण पर आधारित है।

प्रकल्प एवं कार्यक्रम

परिषद् द्वारा संचालित प्रकल्पों एवं कार्यक्रमों को तीन मुख्य समूहों - 'संस्कार', 'सेवा' व 'सम्पर्क' में विभाजित किया गया है।

(अ) संस्कार प्रकल्प

विद्यार्थियों, युवाओं व परिवारों में संस्कार विकास के लिये परिषद् द्वारा निम्न संस्कार कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं :-

1. **राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता -** विद्यार्थियों में राष्ट्र प्रेम के संस्कार एवं मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता का भाव विकसित करने के उद्देश्य से देशभक्ति गीतों के सामूहिक गायन की यह प्रतियोगिता सन् 1967 में प्रारम्भ की गई थी। इस हेतु देशभक्ति गीतों का संकलन ''राष्ट्रीय चेतना के स्वर'' पुस्तिका में किया गया है। यह प्रतियोगिता हिन्दी, संस्कृत एवं प्रादेशिक भाषा में आयोजित की जाती है। देश भर में 50,000 विद्यालयों के लगभग 5 लाख विद्यार्थी प्रतिवर्ष इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में तत्कालीन राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी, श्री वी.वी. गिरी, डॉ. जाकिर हुसैन, ज्ञानी जैलसिंह तथा श्री राम नाथ कोविन्द ने अध्यक्षता कर इस कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की है।

2. **भारत को जानो प्रतियोगिता -** इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में अपने देश, संस्कृति, धर्म व साहित्य की जानकारी बढाना है। इस हेतु परिषद् द्वारा एक पुस्तिका 'भारत को जानो' प्रकाशित की गई है, जिसका उपयोग उच्च प्रतियोगी परीक्षाओं में सन्दर्भ पुस्तक के रूप में भी किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता विद्यालय, शाखा, प्रान्त, रीजन तथा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित की जाती है। विद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता में देश भर से लगभग 15 लाख विद्यार्थी प्रतिवर्ष भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान में तो वृद्धि करती ही है साथ ही भारतीय होने के गर्व की अनुभूति करवाकर उन्हें राष्ट्रीय सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़कर संस्कारों का विकास भी करती है। यह प्रतियोगिता सन् 2001 से अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित की जा रही है।

3. **गुरू वन्दन छात्र अभिनन्दन -** गुरु शिष्य परम्परा का वाहक यह प्रकल्प शिक्षकों के सम्मान व प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के अभिनन्दन से सम्बन्धित है, जिसमें परिषद् के सदस्य समूह में विद्यालयों में कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इस कार्यक्रम की संस्कारपूर्ण विशिष्टता यह है कि छात्र-छात्राएँ अध्यापकों को पुष्प भेंट कर उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस कार्यक्रम में देश के लगभग 5000 विद्यालयों के 35 लाख विद्यार्थी प्रतिवर्ष भाग लेते हैं। परिषद् द्वारा इस कार्यक्रम का आयोजन वर्ष 2001-02 से किया जा रहा है।

4. **संस्कार शिविर -** वर्तमान समय की ज्वलन्त चुनौतियों के समाधान की दिशा में परिषद् का यह महत्वपूर्ण प्रकल्प है। जिसमें आयु वर्ग के अनुसार आवश्यक संस्कार व दायित्वों पर शिविरों के माध्यम से विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रवचन / परामर्श / मोटीवेशन दिया जाता है। ये शिविर व्यक्तित्व विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बाल संस्कार शिविर - जोधपुर महानगर

(ब) सेवा प्रकल्प

समाज के वंचित व पिछडे. वर्ग को समर्पित इस प्रकल्प के अन्तर्गत पूरे भारत में 1761 सेवा प्रकल्प संचालित किये जा रहे हैं। इन प्रकल्पों में निम्न प्रमुख सेवा कार्य किये जाते हैं -

1. **दिव्यांग सहायता एवं पुनर्वास योजना -** भारत विकास परिषद् ने सन् 1990 से इसे राष्ट्रीय प्रकल्प के रुप में प्रारम्भ किया था। आज देश भर में 14 दिव्यांग सहायता एवं पुनर्वास केन्द्रों के माध्यम से प्रतिवर्ष 25-30 हजार कृत्रिम अंग निर्माण कर निःशुल्क प्रदान किये जाते हैं। इसके साथ ही दिव्यांगों के स्वावलम्बन के लिये प्रशिक्षण, कार्यशाला एवं पुनर्वास की सुविधा प्रदान की जाती है। दिल्ली के दिव्यांग केन्द्र को 1995 में तथा दिव्यांग मुक्त लुधियाना में योगदान के लिये लुधियाना केन्द्र को 2004 में राष्ट्रपति पुरस्कार तथा वर्ष 2007 में प्रतिष्ठित फिक्की पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। राजस्थान पश्चिम प्रान्त के सांचोर में इसी प्रकार का दिव्यांग सहायता एवं पुनर्वास केन्द्र संचालित है।

दिव्यांग सहायता - नन्दनवन जोधपुर

2. **वनवासी सहायता योजना -** देश के 8 करोड वनवासी बन्धुओं के लिये शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वावलम्बन के लिये भारत विकास परिषद् उत्तर पूर्व भारत के वनवासी क्षेत्रों में सेवा कार्य करती हैं। वनवासी बच्चों के लिये देश के विभिन्न नगरों में आवासीय विद्यालय / छात्रावास संचालित है। अस्पताल, पुस्तकालय, संस्कार केन्द्र, व्यावसायिक प्रशिक्षण व धनुर्विद्या केन्द्र भी संचालित किये जा रहे हैं ।

वनवासी सहायता अन्तर्गत पाठ्य सामग्री वितरण - देवनगरी सिरोही

3. **ग्राम बस्ती विकास योजना -** परिषद् ने ''समग्र ग्राम विकास योजना'' के अन्तर्गत देश भर में 56 गांवों को विकसित किया है। गांवों मे शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बान, पेयजल आदि मूलभूत सुविधाएं प्रदान की जाती है। कनाडा के शिव जिन्दल फाउण्डेशन के सहयोग से गांवों को विकसित किया जाता है। मोहब्बतपुर (हरियाणा) के ग्रामीण विकास को राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

4. **स्वास्थ्य -** परिषद् द्वारा विभिन्न स्तरों पर स्वास्थ्य जांच, दन्त, नेत्र, कैंसर, हृदय रोग, मधुमेह परीक्षण शिविर आयोजित कर जरुरतमन्द लोगों की सहायता की जाती है। चिकित्सा केन्द्र, पैथोलोजी लैब, एम्बूलेंस, नेत्र आपरेशन, योग शिविर, स्वास्थ्य चेतना कार्यक्रम आदि माध्यमों से स्वास्थ्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे हैं। कोटा (राजस्थान) का 350 बेड व 8 ऑपरेशन थियेटर का सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, चण्डीगढ़ का डायग्नोस्टिक केन्द्र, छबड़ा में अस्पताल, गुड़गाांव का आरोग्य केन्द्र आदि केन्द्रों से प्रतिदिन हजारों रोगी लाभ प्राप्त करते हैं। राजस्थान पश्चिम प्रान्त में जोधपुर में दो पैथोलोजी लैब, दो फिजियोथेरेपी केन्द्र, तीन दन्त चिकित्सा केन्द्र, एक डायलिसिस केन्द्र, अस्थि रोग उपचार केन्द्र, सेवा पटल, बाडमेर में पैथोलोजी लैब, सांचोर में प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र एवं फिजियोथेरेपी केन्द्र, बालोतरा में फिजियोथेरेपी केन्द्र के माध्यम से स्थाई रुप से जरुरतमंदों को लागत मूल्य पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। जोधपुर, बाड़मेर व आहोर में एम्बुलेंस सेवा भी उपलब्ध है।

5. **पर्यावरण** - परिषद् द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं विकास के लिए प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में पौधरोपण किया जाता है। बड़ी संख्या में तुलसी तथा अन्य औषधीय पौधों का वितरण किया जाता है। पर्यावरण के प्रति जागरुकता विकसित करने के उद्देश्य से विचार गोष्ठियां व प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है। प्रान्त द्वारा वृक्षारोपण महाभियान प्रारम्भ किया गया है जिसके अन्तर्गत 3 लाख पौधें लगाए जाने का लक्ष्य है। मथानिया शाखा द्वारा 1 लाख 21000 पौधें लगाए गए हैं। प्लास्टिक के उपयोग को हतोत्साहित करने के लिए जागरुकता अभियान चलाये जा रहे हैं तथा कपड़े की थैलियों का वितरण किया जा रहा है। राजस्थान पश्चिम प्रान्त ने इस प्रकल्प को ध्वजवाहक प्रकल्प घोषित किया है।

वृक्षारोपण - मथानिया

(स) सम्पर्क प्रकल्प

1. **संस्कृति सप्ताह** - संस्कृति सप्ताह का उद्देश्य भारतीय संस्कृति एवं संस्कार युक्त कार्यक्रमों को प्रतिस्पर्धा के रुप में समाज के सम्मुख रखकर उसे परिषद् के संस्कारित भारत निर्माण के संकल्प से अवगत करना है। इसका आयोजन प्रति वर्ष सितम्बर माह में किया जाता है। इसके अन्तर्गत महापुरुषों की वेशभूषा, नृत्य, गायन, भजन, अंताक्षरी, कहानी कथन, रंगोली, चित्रकला, पूजा थाल सज्जा, पाक कला, आत्मरक्षा आदि में से कोई सात कार्यक्रमों का चयन कर एक सप्ताह या एक पखवाड़े में आयोजित किए जाते हैं। इस कार्यक्रम के माध्यम से महिला नेतृत्व का विकास किया जाता है।
2. **प्रेरक दिवस** - महापुरुषों की जयन्तियां, नव वर्ष, युवा दिवस, स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस, तीज-त्यौहार एवं परिषद् स्थापना दिवस के अवसरों पर विभिन्न प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। भारत विकास परिषद् गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस परिषद् की स्थापना के समय से सम्पूर्ण भारत वर्ष में विशेष रुप से मनाती है।

3. **एक शाखा एक गांव योजना -** भारत गांवों में बसता है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2019 -20 से भारत विकास परिषद् की प्रत्येक शाखा एक गांव का चयन कर वहां पर भारत विकास परिषद् के सेवा, संस्कार व सम्पर्क के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करती है तथा ग्राम वासियों में जागरुकता विकास किया जाता है।

(द) महिला सहभागिता

1. **बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ - बेटी बसाओ - बेटी अपनाओ :** इस प्रकल्प के अन्तर्गत 'बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ - बेटी बसाओ' बोध वाक्य के साथ कन्या जन्म को एक गौरवपूर्ण घटना के रुप में स्वीकार किया गया है। कन्या जन्म के घर पर आनन्द उत्सव तथा माता पिता का सम्मान किया जाता है। प्रकल्प के अन्तर्गत बेटियों की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आत्मरक्षा से सम्बंधित कार्य किए जाते हैं। एक शाखा कम-से-कम एक आर्थिक रुप से कमजोर अथवा अनाथ बालिका को गोद लेकर उसकी पढ़ाई की व्यवस्था करती है तथा उसे रोजगार प्रदान करने तक सहायता प्रदान करती है।
2. **आत्मनिर्भर भारत :** महिला सहभागिता प्रकल्प में आत्मनिर्भर भारत के अन्तर्गत विभिन्न कौशल विकास प्रकल्पों का संचालन किया जाता है। इस प्रकल्प का मुख्य उद्देश्य महिला स्वावलंबन एवं सशक्तिकरण है।
3. **एनीमिया मुक्त भारत :** इस प्रकल्प का मुख्य उद्देश्य स्वस्थ भारत निर्माण है। एनीमिया आज एक महामारी का रुप ले चुका है। इसलिए भारत विकास परिषद् द्वारा सम्पूर्ण भारत में यह अभियान चलाया जा रहा है। महिलाओं एवं बालिकाओं को एनीमिया के सम्बन्ध में जागरुक करना, हीमोग्लोबिन जाँच कर उन्हें उचित चिकित्सकीय परामर्श एवं चिकित्सा प्रदान कर एनीमिया मुक्त करना इस प्रकल्प का मुख्य उद्येश्य है। राजस्थान पश्चिम प्रान्त ने इस प्रकल्प को ध्वजवाहक प्रकल्प घोषित किया है।

एनीमिया मुक्त भारत अन्तर्गत जाँच शिविर - सुमेरपुर शिवगंज

(य) विविध गतिविधियाँ

1. कुटुम्ब (परिवार) प्रबोधन - परिवारों में एकता और राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत होने पर ही राष्ट्र शक्तिशाली बनेगा। व्यक्ति को सामाजिक इकाई मानना भ्रांति समान है। वास्तव में कुटुंब ही आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक इकाई है। हमें अपनी परंपराओं व संस्कृति से जुड़े रहने के लिए अपनी मूल भाषा, भूषा, भजन, भवन, भ्रमण और भोजन को अपनाना होगा। कुटुम्ब प्रबोधन के माध्यम से भारत विकास परिषद् समाज के विभिन्न परिवारों के मध्य परस्पर सामंजस्य, सहयोग और सौहार्द स्थापित करने का प्रयास करता है, जिससे समाज और देश मजबूत बन सके। भारत विकास परिषद् के सदस्यों को 'हमारा परिवार - आदर्श परिवार' की अवधारणा को साकार करते हुए समाज के समक्ष उदाहारण प्रस्तुत करना चाहिए।
2. योग एवं प्राणायाम - अपने जीवन में प्रतिदिन योग एवं प्राणायाम को अपनाकर हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। समाज में योग एवं प्राणायाम के प्रति चेतना लाने के लिए भारत विकास परिषद् निम्न कार्य कर सकती है :

   योग शिविर का आयोजन, स्थाई प्रकल्प के रुप में योग प्रशिक्षण केन्द्र, विद्यालयों में 'योग को जानो' प्रतियोगिता का आयोजन, 'योग की आवश्यकता' विषय पर नगर में निबन्ध, भाषण एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन।
3. अन्य गतिविधियां - भारत विकास परिषद् द्वारा आपदा राहत एवं पुनर्वास, नशा मुक्ति, कौशल विकास, निर्धन छात्र एवं जरुरतमंदों की सहायता, जीव दया, विचार गोष्ठी, सेमिनार, कार्यशालाएं, जन सम्पर्क, सामुहिक सरल विवाह, मुक्तिधाम विकास आदि अनेक कार्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार सम्पादित किये जाते हैं।

भारत विकास परिषद् को दिए गए अनुदान पर आयकर की धारा 80-G के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

सम्पर्क

केन्द्रीय कार्यालय : भारत विकास भवन, बी.डी. ब्लॉक, डी.डी.ए. मार्केट के पीछे, पावर हाउस मार्ग, पीतमपुरा, दिल्ली - 110 034 • दूरभाष नं. : 011-27313051, 27316049, 27314515

प्रान्तीय कार्यालय : अध्यक्ष : बी-78, श्रीराम नगर, बिड़ला स्कूल रोड़, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.) 342 008 • मो. : 89498 02623

महासचिव : तहसील ऑफिस के सामने, सुमेरपुर जिला पाली (राज.)
मो. : 98292 32025 • ईमेल : bvprajwest@gmail.com

अधिक जानकारी के लिए कृपया भारत विकास परिषद् की वेबसाइट www-bvpindia.com अथवा राजस्थान पश्चिम प्रान्त की वेबसाइट www-bvprajwest.org पर विजिट करें।

प्रकाशन : जुलाई - 2024